11

स्त्रीप्रत्यय - ङीप् प्रत्यय

यहाँ स्त्रीप्रत्यय प्रकरण के आदि में ही वर्णित जो आठ प्रत्यय हैं उनमें ङीप् प्रत्यय भी प्रमुख है। उसके विधायक अनेक सूत्र हैं। उनका ही यहाँ व्याख्यान किया जा रहा है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- ङीष् प्रत्यय को जान पाने में;
- ङीष् प्रत्यय किससे प्रातिपदिक होता है जान पाने में;
- ङीष् प्रत्ययान्त शब्द को जान पाने में;
- ङीष् प्रत्यय के संयोजन शब्दों में क्या-क्या परिवर्तन होता है जान पाने में;
- ङीष् प्रत्यय संयोजन करके स्त्रीलिङ्ग शब्दों का निर्माण कर पाने में;
- पठनपाठन काल में जहाँ-जहाँ शब्दों में ङीष् प्रत्यय होता है अथवा नहीं। यह सुस्पष्ट जान पाने में।

(11.1) ''षिदगौरादिभ्यश्च'' (4.1.89)

सूत्रार्थः–षिदन्त अदन्त प्रातिपदिक, गौरादिगणपठितशब्दान्त अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीष् प्रत्यय होता है।

टिप्पणियाँ

सूत्रावतरण

ङीप्, ङीष्, ङीन्, इन तीन प्रत्ययों में ङीष प्रत्यय अन्यतम् है। उसके विधान के लिए ''षिद्गौरादिभ्यश्च'' सूत्र भगवान् पाणिनि ने रचा।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। यह सूत्र ङीष् प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में दो पद हैं। षिद्गौरादिभ्य: यह पञ्चम्यन्त पद है। और ''च'' अव्यय पद है। यहाँ सूत्र में ''अन्यतों ङीष्'' सूत्र से ङीष् पद की अनुवृत्ति होती है। और अजाद्यतष्टाप्-- सूत्र से ''अत:'' पद की अनुवृत्ति होती है। इस सूत्र में ''ङ्याप्प्रातिपदिकातै सूत्र से ''प्रातिपदिकात्'' पद की अनुवृत्ति होती है। यहाँ पर ''प्रत्यय:'' और ''परश्च'' अधिकार आता है। यहाँ पर ''षिद्गौरादिभ्य:'' पद समस्त है। और यहाँ बहुव्रीहिगर्भेन्तरेतरयोग द्वन्द समास है। और यहाँ विग्रह होता है ष् इत् यस्य स: षित्। गौर: आदि: येषां ते गौरादय:। गौ: राष्ट्र शब्द में है जिसके षिद्गौरादय: तेभ्य: षिद्गौरादिभ्य:। उससे इस शब्द का अर्थ होता है षित् का और गौर आदि का। और गौरादि का अर्थ गौरादिगण में पठित।

सूत्रार्थ विचार

यहाँ सूत्र में षिद्गौरादिभ्य: पद प्रातिपदिकात् पद का विशेषण है। उससे ''येन विधिस्तदन्तस्य'' सूत्र से तदन्त विधि है। और इसके बाद (षिदन्तात् गौरादिगणपठितप्रशब्दान्तात्) षित और गौरादिगण में पठित शब्दान्त से अर्थ आता है। पुन: अत: का भी प्रातिपदिकात् का विशेषण होता है। उससे अत: यहाँ भी ''येन विधिस्तदन्तस्य'' सूत्र से तदन्तविधि होती है। उससे अत: पद का अदन्तात् यह अर्थ प्राप्त होता है। एवं सभी पदों के संयोजन से सूत्रार्थ होता है'' षिदन्त अदन्त प्रातिपदिक से और गौरादिगण पठित शब्दों जो अदन्त प्रातिपदिक है। उनसे स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीष् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–नर्त्तकी, खनकी, रजकी इत्यादि षित के उदाहरण है। गौरी, सुन्दरी, नटी, कटी, पितामही, मातामही, इत्यादि गौरादिगण के उदाहरण हैं।

सूत्रार्थ समन्वय–नर्त्तकी, गौरी इन दोनों उदाहरणों के सूत्रार्थ का समन्वय प्रस्तुत किया जा रहा है।

नर्त्तकी

नृत् धातु से ''शिल्पिनी ष्वुन्'' सूत्र से ष्वुन् प्रत्यय होने पर नृत् ष्वुन् स्थिति होती है। इसके बाद ''षकारस्य ष:'' प्रत्यय का इस सूत्र से षकार की और ''हलन्त्यम्'' सूत्र से नकार की इत्संज्ञाह होती है। इसके बाद ''तस्यलोप:'' सूत्र से उन लोगों के लोप होने पर नृत् वु स्थिति होती हे। इसके बाद वु के आर्धधातुक संज्ञा से और ''पुगन्तलघूपघस्य च'' सूत्र से उपधा में गुण होने पर ''बु'' के स्थान पर अक आदेश होने पर नर्तक शब्द सिद्ध होता है। यहाँ ष्वुन् प्रत्यय षिद् है। उससे नर्त्तक शब्द षिदन्त है। अदन्त है। और कृदन्त होने से प्रातिपदिक भी है। अत: स्त्रीत्व की विवक्षा में षिदन्त अदन्त नर्त्तक प्रातिपदिक ''षिद्गौरादिम्यिश्च'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय होता है। उससे नर्तक ङीष् स्थिति होती है। उसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोप:'' सूत्र से उन

दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उन से नर्तक ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिञम्'' सूत्र से नर्तक की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर नर्त्तकी रूप सिद्ध होता है।

गौरी

गौरादिगण में गौर शब्द पठित है। उससे यह शब्द गौरादिगण में पठित है। और व्यपदेशिवत् भाव से गौरादिगणपठित शब्दान्त का भी है। इसी प्रकार यह अदन्त है, और प्रातिपदिक भी है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में गौरादिगणपठित अदन्त शब्दान्त गौर शब्द प्रातिपदिक से ''षिद् गौरादिभ्यश्च'' सू। से ङीष् प्रत्यय होता है। उससे गौर ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' इस सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे गौर ई स्थिति होती है। इसके बाद ''यचिञम्'' सूत्र से गौर की भसंज्ञा होती है। और उससे ''यस्येति च'' सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर गौरी रूप सिद्ध होता है।

(11.2) ''वोतोगुणवचनात्'' (4.1.44)

सूत्रार्थ–गुणवाचक अनुपसर्जन उदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योतक होने पर विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरण–ङीप्, ङीष्, ङीन् इन तीनों प्रत्ययों में ङीष् प्रत्यय अन्यतम है। उसके विधान के लिए ''वोतोगुणवचनात्'' सूत्र की भगवान पाणिनि ने रचना की।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। यह सूत्र ङीष् प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। ''उतः'' पञ्चम्यन्त पद है। ''गुववचनात्'' पञ्चम्यन्त पद है। ''वा'' यह अव्ययपद है। यहाँ पर ''अन्यतोङीष्'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय की अनुवृत्ति होती है। इस सूत्र में ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से ''प्रातिपदिकात्'' पद की अनुवृत्ति होती है। ''अनुपसर्जनात्'' अधिकार, ''प्रत्ययः'' अधिकार और ''परश्च'' यह अधिकार यहाँ आता है।

सूत्रार्थ विचार–यहाँ गुणवचनात् का गुणवाचक से अर्थ है। और यह पद प्रातिपदिकात् का विशेषण है। उतः पद भी ''प्रातिपदिकात्'' का विशेषण है और उससे ''येन विधिस्तदन्तस्य'' सूत्र से तदन्तविधि होती है। उससे उतः का उदन्तात् यह अर्थ होता है। और इसके बाद सूत्रार्थ होता है–''गुणवाची अनुपसर्जन उदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है।''

उदाहरण–मृद्वी, मृदुः। लध्वी, लघुः। गुर्वी, गुरुः। तन्ती, तनुः। पृथ्वी, पृथुः। साध्वी साधुः। पट्वी, पटुः। इत्यादि उदन्त गुणवाचक के उदाहरण होते हैं।

सूत्रार्थ समन्वय–मृद्वी, मृदुः, यहाँ सूत्रार्थ का समन्वय प्रस्तुत किया जा रहा है।

मृद्वी, मृदुः–यहाँ मृदु शब्द है। यह शब्द गुणवाचक है। उदन्त है। और प्रातिपदिक भी है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में गुणवाचक मृदु प्रातिपदिक से ''वोतोगुणवचनात्'' सूत्र से विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है। उससे मृदु ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के

टिप्पणियाँ

ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे मृदु ई स्थिति होती है। इसके बाद ''इको यणचि'' सूत्र से यण आदेश होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर मृद्वी रूपं सिद्ध होता है। और जब ङीष् प्रत्यय नहीं होता है तब मृदुः रूप होता है।

(11.3) ''बह्वादिभ्यश्च'' (बहु आदि)

सूत्रार्थ–बह्वादिगण में पठित अनुपसर्जन प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरण–ङीप्, ङीष्, ङीन् इन तीनों प्रत्ययों में ङीष् प्रत्यय अन्यतम है। उसके विधान के लिए ''बह्वादिभ्यश्च'' सूत्र की भगवान पाणिनि ने रचना की।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। यह सूत्र ङीष् प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में दो पद हैं। बह्वादिभ्यः यह पञ्चम्यन्त पद है। ''च'' अव्यय पद की अनुवृत्ति होती है। यहाँ ''अन्यतो ङीष्'' सूत्र से ङीष् की अनुवृत्ति आती है। इस सूत्र में ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से ''प्रातिप्रदिकात्'' की अनुवृत्ति आती है। ''अनुपसर्जनात्'' अधिकार, ''प्रत्यय'' यह अधिकार और ''परश्च'' अधिकार यहाँ आता है। यहाँ ''बह्वादिभ्यः'' पद समस्त है। और यहाँ बहुव्रीहिसमास है। इसका विग्रह होता है–बहुः आदिः येषां ते बह्वादयः, तेभ्यः बह्वादिभ्यः। इसका बहु आदिगण में पठित शब्दों से यही अर्थ है।

सूत्रार्थ विचार–यहाँ बह्वादिभ्यः प्रातिपदिकात् का विशेषण है। और इसके बाद सूत्रार्थ होता है–''बह्वादिगण में पठित अनुपसर्जन प्रातिपदिक स्त्रीत्व द्योत्य होने पर विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है।''

उदाहरण–बह्वी, बहुः। कपी, कपिः। अही, अहिः। मुनी, मुनिः। इत्यादि बह्वादिगण के उदाहरण हैं।

सूत्रार्थ समन्वय–बह्वी, बहुः यहाँ सूत्रार्थ का समन्वय प्रस्तुत किया जा रहा है।

बह्वी, बहु–यहाँ बहु शब्द है। यह शब्द बह्वादि गण में पठित है। और प्रातिपदिक भी है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में बह्वादिगण में पठित बहु प्रातिपदिक से ''बह्वादिभ्यश्च'' सूत्र से विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है। उससे बहु ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे बहु ई स्थिति होती है। इसके बाद ''इकोयणचि'' सूत्र यण आदेश होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर बह्वी रूप सिद्ध होता है। जो ङीष् प्रत्यय नहीं होता है तब बहुः रूप सिद्ध होता है।

(11.4) ''इतो मनुष्य जातेः'' (4.1.64)

सूत्रार्थ–मनुष्य जाति वाचक अनुपसर्जन इदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य ङीष् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरण–ङीप्, ङीष्, ङीन् इन तीनों प्रत्ययों में ङीष् प्रत्यय अन्यतम है। उसके विधान के लिए ''इतो मनुष्यजातेः'' यह सूत्र की भगवान पाणिनि ने रचना की।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। यह सूत्र ङीष् प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में दो पद हैं। इतः यह पञ्चम्यन्त पद है। मनुष्यजातेः यह पञ्चम्यन्त पद है। यहाँ पर ''अन्यतोङीष'' सूत्र से ङीष् पद की अनुवृत्ति होती है। द्वय सूत्र में ''ङयाप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से ''प्रातिपदिकात्'' पद की अनुवृत्ति होती है। अनुपसर्जनात् अधिकार, ''प्रत्ययः'' अधिकार, और ''परश्च'' अधि कार है। यहाँ ''मनुष्य जातेः'' पद समस्त है। और यहाँ पर षष्ठीतत्पुरुषसमास है। इसका विग्रह है ''मनुष्याणां जातिः, मनुष्य जातिः तस्या मनुष्यजाते। यहाँ मनुष्य जातिवाचक से अर्थ है।

सूत्रार्थ–यहाँ इतः पद प्रातिपदिक का विशेषण होता है। अतः ''येन विधिस्तदन्तस्य'' सूत्र से तदन्त विधि होती है। उससे इतः का इदत्तात् यह अर्थ प्राप्त होता है। मनुष्यजातेः भी प्रातिपदिकात् का विशेषण है। और इसके बाद सूत्र का अर्थ होता है ''मनुष्य जातिवाचक अनुपसर्जन द्वदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीष् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–दाक्षी। प्लाक्षी। औदमेयी। अवन्ती। कुन्ती इत्यादि इदन्त मनुष्य जाति वाचक के उदाहरण है।

सूत्रार्थ–''दाक्षी'' यहाँ पर सूत्रार्थ का समन्वय प्रस्तुत किया जा रहा है।

दाक्षी–दाक्षि शब्द है। यह शब्द मनुष्य जाति वाचक है। और यह इदन्त भी है और प्रातिपदिक भी है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में इदन्त मनुष्य जातिवाचक से दाक्षि प्रातिपदिक से ''इतो मनुष्य जातेः'' सूत्र से विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है। उससे दाक्षि ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। तेन दाक्षि ई स्थिति होती है। ''यचिभम्'' सूत्र से भसंज्ञा होती है। इसके बाद ''यस्येति च'' सूत्र से इकार का लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर दाक्षी रूप सिद्ध होता है।

(11.5) ''पुंयोगादाख्यायाम्''

सूत्रार्थ–''पुरुष सम्बन्ध से स्त्री में विद्यमान पुरुषवाचक अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीष् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरण–ङीप्, ङीष्, ङीन् इन तीन प्रत्ययों में ङीष् प्रत्यय अन्यतम है। इसके विधान के लिए पुंयोगादाख्यायाम् सूत्र की भगवान पाणिनि ने रचना की।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। यह सूत्र ङीष् प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में दो पद

टिप्पणियाँ

हैं। पुंयोगाद् यह पञ्चम्येकवचनान्तपद है। आख्यायाम् यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। परन्तु यहाँ पञ्चमी अर्थ में सप्तमी विभक्ति है, उससे आख्यायाम् के स्थान पर आख्याया: जानना चाहिए। यहाँ पर ''अन्यतोङीष्'' सूत्र से ङीष् पद की अनुवृत्ति होती है। इस सूत्र में ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से ''प्रातिपदिकात्'' की अनुवृत्ति आती है। ''अनुपसर्जनात्'' अधिकार, ''प्रत्यय:'' अधिकार, और ''परश्च'' अधिकार है। यहाँ र पुंयोगात् के और पुरुषसम्बन्ध से अर्थ बोध्य है। एवं आख्याशब्द का वाचक अर्थ है। उससे आख्याया: का वाचकात् अर्थ जानना चाहिए। यहाँ किसका वाचक की जिज्ञासा में पुंयोग से पदसान्निध्यवश से पुरुषवाचक से प्राप्त होता है।

सूत्रार्थ विचार–यहाँ पुंयोगात् का स्त्रियाम् से अन्वय होता है। और स्त्रियाम् का ''पुरुषवाचकात्'' से अन्वय होता है। पुरुषवाचक का प्रातिपदिक से अन्वय है। अत: यह पद प्रातिपदिकात् का विशेषण होता है। अत: ''येन विधिस्तदन्तस्य'' सूत्र से तदन्तविधि होती है। उससे अत: का अदन्तात् यह अर्थ प्राप्त होता है। और सर्वपदसंयोजन से सूत्र का अर्थ होता है। ''पुरुषसम्बन्ध से स्त्री में विद्यमान पुरुषवाचक अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीष् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरण–ङीष्, ङीष्, ङीन् इन तीनों प्रत्ययों में ङीष् प्रत्यय अन्यतम है। उसके विधान के लिए ''जातेस्त्रीविषयादयोपधात्'' सूत्र की भगवान पाणिनि ने रचना की।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। यह सूत्र ङीष् प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। जाते: यह पञ्चम्यन्त पद है। अस्त्रीविषयाद् यह पञ्चम्यन्त पद है। ''अयोपधात्'' पञ्चम्यन्त पद है। यहाँ पर ''अन्यतोङीष्'' सूत्र से ङीश् पद की अनुवृत्ति होती है। इस सूत्र में ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से प्रातिपदिकात् की अनुवृत्ति होती है। ''अनुपसर्जनात्'' अधिकार, ''प्रत्यय:'' अधिकार, और ''परश्च'' अधिकार यहाँ आता है। यहाँ पर अस्त्रीविषयात् पद समस्त है। और यहाँ पर बहुव्रीहि गर्भ नञ्तत्पुरुष समास है। इसका विग्रह होता है स्त्री विषय: यस्य स: स्त्रीविषय:। अस्य च नित्यस्त्रीलिङ्ग: इत्यर्थ (स्त्री विषय है जिसका वह है स्त्रीविषय और यह निव्यस्त्रीलिङ्ग है) न स्त्रीविषय: यस्य स: अस्त्रीविषय:। (नहीं है स्त्री विषय जिसका अस्त्री विषय) तस्मात् अस्त्रीविषयात्। अस्य नित्य स्त्रीलिङ्गमिन्नात् (नित्यस्त्रीलिङ्ग भिन्न से) अनियतस्त्रीलिङ्गात् तक है। पुन: अयोपध से ये भी समस्त पद है। यहाँ भी बहुव्रीहिगर्मनञ्तत्पुरुषसमास है। और इसका विग्रह होता है य: उपधा यस्य स: योपद्य (य है जिसके उपधा में, न योपध यह योपध है, तस्मात् अयोपस्तात्। और इसका यकार उपधा भिन्न यही अर्थ है।

सूत्रार्थ विचार–यहाँ जाते: पद है, अस्त्री विषयात् पद है, अयोपधात् पद है। और अनुपसर्जनात् पद इसका विशेषण है। उससे सूत्र का अर्थ होता है–''अनियतस्त्रीलिङ्ग यकारोपध भिन्न अनुपसर्जन जातिवाचक प्रापिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीष् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–तटी, कुक्कुटी, सूकरी, वृषली, कठी, वह्वची, औपगर्वा, इत्यादि उदाहरण हैं।

सूत्रार्थ समन्वय–तटी, वृषली, कठी इन तीनों उदाहरणों में इस सूत्रार्थ का समन्वय किया जा रहा है।

वटी–यहाँ तट शब्द है। यह शब्द त्रिलिङ्गी है। यहाँ से अनिमतस्त्रीलिङ्ग है। इस शब्द के

उपधा में यकार नहीं है। अत: यह यकारोपधभिन्न भी है। और अनुपसर्जन भी है। पुन: जातिवाचक भी है। और इसी प्रकार प्रातिपदिक भी है। अत: स्त्रीत्व विवक्षा में अनियत स्त्रीलिङ्ग से अयोपध अनुपसर्जन जातिवाचक तट प्रातिपदिक से ''जातेरस्त्री विषयादयोपधात्'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय होता है। उससे तट ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोप:'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे तट ई स्थिति होती है। ''यचिभम्'' सूत्र से भसंज्ञा होती है। इसके बाद ''यस्येति च'' सूत्र से अकार काल लोप होने और वर्ण सम्मेलन होने पर तटी रूप सिद्ध होता है।

वृषली–यहाँ वृषल शब्द है। यह शब्द द्विलिङ्ग है इससे अनियतस्त्रीलिङ्ग है। इस शब्द के उपधा में यकार नहीं है। अत: यकारोपधमिन्न भी है। और अनुसर्जन भी है। पुन: वाचक भी है। और इसी प्रकार प्रातिपदिक भी है। अत: स्त्रीत्व विवक्षा में ''अनियतस्त्रीविषयोपद्यात्'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय होता है। उससे वृषल ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोप:'' सूत्र से उन दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। इससे वृषल ई स्थिति होती है। ''यचिभम्'' सूत्र से भसंज्ञा होती है। इसके बाद ''यस्येति च'' सूत्र से अकार का लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर वृषली रूप सिद्ध होता है।

कठी–यहाँ कठ शब्द है। यह शब्द द्विलिङ्गी है। इससे अनियतस्त्रीलिङ्ग है। इस शब्द की उपधा में यकार नहीं है। अत: यकारोपध भिन्न भी है। और अनुपसर्जन भी है। पुन: जातिवाचक भी है। इसी प्रकार प्रातिपदिक भी है। अत: स्त्रीत्व विवक्षा में अनियतस्त्रीलिङ्ग अयोपध अनुपसर्ग जातिवाचक कठ शब्द प्रातिपदिक से ''नातेरस्त्रीविषयादयोपधात्'' सूत्र से ङीप् प्रत्यय होता है। उससे कठ ङीष् स्थिति होती है। ''यचि भम्'' सूत्र से भसंज्ञा होती है। इसके बाद ''यस्येति च'' सूत्र से अकार लोप होने पर और वर्णसम्मेलन होने पर कठी रूप सिद्ध होता है।

(11.6) ''स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्'' (4.1.54)

सूत्रार्थ–संयोगोपध भिन्न और उपसर्जनीभूत जो स्वाङ्ग, उस प्रकार के स्वाङ्वाची अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व होने पर विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरण–ङीप्, ङीष्, ङीज, इन तीनों प्रत्ययों में ङीष् प्रत्यय अन्यतम है। उसके विधान के लिए ''स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्'' सूत्र भगवान पाणिनी ने रचा।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है इस सूत्र से ङीष् प्रत्यय का विधान होता है। इस सूत्र में चार पद हैं। स्वाङ्गात् यह पञ्चम्यन्त पद है। ''च'' अव्यय पद है। उपसर्जनात् पञ्चम्यन्त पद है। असंयोगोपधात् यह पञ्चम्यन्न पद है। यहाँ पर ''अन्यतोङीष'' सूत्र से ङीष् पद की अनुवृत्ति आती है। ''बोतोगुणवचनात्'' सूत्र से ''वा'' पद की अनुवृत्ति होती है। ''अजाद्यतष्टाप्'' सूत्र से अत: पद की अनुवृत्ति आती है। इस सूत्र में ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से ''प्रातिपदिकात्'' पद की अनुवृत्ति आती है। यहाँ सूत्र में ''प्रत्यय:'' अधिकार और ''परश्च'' अधिकार आता

टिप्पणियाँ

है। असंयोगोपधात् पद समस्त है। और यहाँ पर बहुव्रीहिगर्भनञ्तत्पुरुषसमास है। और इसका विग्रह है-संयोगः उपधायां यस्य सः संयोगोपधः (संयोग उपधा में है जिसके) न संयोगोपधः इति असंयोगोपधः, तस्मात् असंयोगोपधात् (नहीं है संयोग जिसकी उपधा में असंयोगोपध उससे असंयोगोपधा से। और इसका संयोगोपधभिन्न से अर्थ है।

सूत्रार्थ विचार–यहाँ पर उपसर्जनात् और असंयोगोपधात् स्वाङ्गात् पद का विशेषण है। अर्थात् उपसर्जन, असंयोगोपध स्वाङ्गवाची पद का विशेषण है। उससे संयोगोपधभिन्न और उपसर्जन जो स्वाङ्गम् प्राप्त होता है। पुनः स्वाङ्गात् पद प्रातिपदिकात् का विशेषण है। अतः पद भी प्रातिपदिकात् का विशेषण है। अतः ''येन विधिस्तदन्तस्य'' सूत्र से तदन्त विधि होती है। उससे स्वाङ्गन्त अदन्त यह अर्थ प्राप्त होता है। और इसके बाद सूत्रार्थ होता है संयोगोपधभिन्न और उपसर्जनीभूत जो स्वाङ्ग हे उस स्वाङ्गवाचक अदन्त प्रातिपदिक शब्द से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–अतिकेशी, अतिकेशा। चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखा। सुकेशी, सुकेशा। पीनस्तनी, पीनस्तना इत्यादि उदाहरण हैं।

सूत्रार्थ समन्वय–अतिकेशी, अतिकेशा। चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखा यहाँ पर सूत्रार्थ का समन्वय प्रस्तुत किया जा रहा है।

अतिकेशी, अतिकेशा–यहाँ अतिकेश शब्द है। यहाँ केशशब्द स्वाङ्गवाचक है। पुनः केशशब्द की उपधा में संयोग नहीं है अतः यह असंयोगोपध भी है। और इस का अर्थ है केशान् अतिक्रान्तः। वह केश पदार्थ अतिक्रान्त अर्थ में उपसर्जन भी है। और इसी प्रकार असंयोगोपध उपसर्जनी भूत स्वाङ्गवाचक शब्द केश शब्द है। उस प्रकार केशशब्दान्त अदन्त प्रातिपदिक अतिकेश होता है। और इसी प्रकार असंयोगोपध और उपसर्जनीभूत स्वाङ्ग केश तदन्त अदन्त शब्द अतिकेश प्रातिपदिक से स्त्रीत्व विवक्षा में ''स्वाङ्गच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्'' सूत्र से विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है। उससे अतिकेश ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे अतिकेश ई स्थिति होती है। ''यचिभम्'' सूत्र से भसंज्ञा होती है। इसके बाद ''यस्येतिच'' सूत्र से अकार लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर अतिदेशी रूप सिद्ध होता है। और जब ङीष् प्रत्यय नहीं होता है तब ''अजाव्यतष्टाप्'' सूत्र से टाप् प्रत्यय होने पर अतिकेश टाप् स्थिति में अनुबन्धलोप होने पर अतिकेश आ स्थिति होती है। इसके बाद ''अकःसवर्णे दीर्घः'' सूत्र से दीर्घ एकादेश होने पर अतिकेशा रूप सिद्ध होता है।

चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखा–यहाँ पर चन्द्रमुख शब्द है। यहाँ मुखशब्द स्वाङ्गवाचक है। पुनः मुखशब्द के उपधा में संयोग नहीं है। अतः असंयोगोपध भी है। और इसका अर्थ भी होता है–चन्द्रसदृशमुखवान् (चन्द्रमा के समान मुख वाला) उस मुखपदार्थ का अन्यपदार्थ में उपजर्सन भी है। और इस प्रकार असंयोगोपध उपसर्जनीभूत स्वाङ्गवाचक शब्द मुख शब्द है। इस प्रकार मुखशब्दान्त अदनत प्रातिपदिक चन्द्रमुख शब्द होता है। और उसी प्रकार असंयोगोपध और उपसर्जनीभूत स्वाङ्ग मुख उस अदन्त चन्द्रमुख प्रातिपदिक से स्त्रीत्व विवक्षा में ''स्वाङ्गच्चोपसर्मनादसंयोगोपधात्'' सूत्र से विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है। उससे चन्द्रमुख

ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे चन्द्रमुख ई स्थिति होती है। ''यचि भम्'' सूत्र से भसंज्ञा होती है। इसके बाद ''यस्येति च'' सूत्र से अकार का लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर चन्द्रमुखी रूप सिद्ध होता है। और जब ङीष् प्रत्यय नहीं होता है तब ''अजाद्यतष्टाप्'' सूत्र से टाप् प्रत्यय होने पर चन्द्रमुख टाप् इस स्थिति में अनुबन्धलोप होने पर चन्द्रमुख आ स्थिति होती है। इसके बाद ''अकः सवर्णेदीर्घः'' सूत्र दीर्घ एकादेश होने पर चन्द्रमुखा रूप सिद्ध होता है।

(11.9) ''क्रीतात्करणपूर्वात्'' (8.9.40)

सूत्रार्थ–करण पूर्वक्रीतान्त अनुपसर्जन 'अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीष् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणम्–ङीप्, ङीष्, ङीन् इन तीनों प्रत्ययों में ङीष् प्रत्यय अन्यतम है। उसके विधान के लिए ''क्रीतात्करणपूर्वात्'' सूत्र की भगवान पाणिनी ने रचना की।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। यह सूत्र ङीष् प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में दो पद हैं। क्रीतात् यह पञ्चम्यन्त पद है। करणपूर्वात् यह पञ्चम्यन्त पद है। यहाँ पर ''अन्यतो ङीष्'' सूत्र से ङीष् पद की अनुवृत्ति आती है। और ''अजाद्यलष्टाप्'' सूत्र से अतः पद की अनुवृत्ति होती है। इस सूत्र में ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से ''प्रातिपदिकात्'' सूत्र की अनुवृत्ति आती है। ''अनुपसर्जनात्'' अधिकार, ''प्रत्ययः'' अधिकार और ''परश्च'' अधिकार सूत्र यहाँ आता है। यहाँ पर करणपूर्वात् पद समस्त है। और यहाँ बहुव्रीहिसमास है। और उसका विग्रह होता है करणं पूर्वं यस्य सः करणपूर्वः, तस्मात् करणपूर्वात्। (करण पूर्व में है जिसके वह है करण पूर्वः उससे करणपूर्व से। और इसका अर्थ है करणपूर्वकात्।

सूत्रार्थ विचार–यहाँ पर अतः पद है और ''क्रीतात्'' और ''प्रातिपदिकात्'' इसका विशेषण है। अतः ''येन विधिस्तदन्तस्य'' सूत्र से तदन्तविधि है। और उससे अदन्त क्रीतान्त अर्थ प्राप्त होता है। करणपूर्वात् पद भी ''प्रातिपदिकात् का विशेषण होता है। और इसके बाद सूत्र का अर्थ होता है–''करणपूर्व क्रीतान्त अनुपसर्जन अदन्त प्रातिपदिक स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीष् प्रत्यय होता है।''

उदाहरण–वस्त्रक्रीती। अश्वक्रीती।

सूत्रार्थ समन्वय–वस्त्रक्रीती यहाँ पर सूत्रार्थ का समन्वय प्रस्तुत किया जा रहा है।

वस्त्रक्रीती–यहाँ पर वस्त्रक्रीत शब्द है। यह शब्द क्रीतान्त है। और पुनः अदन्त भी इस शब्द का पूर्व भाग है। वस्त्र और उसका करण है। अतः यह शब्द करणपूर्वक भी है। और प्रातिपदिक भी है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में करण पूर्वक क्रीतान्त अदन्त प्रातिपदिक वस्त्रक्रीत शब्द से ''क्रीतात्करणपूर्वात्'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय होता है। उससे वस्त्रक्रीत ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे वस्त्रक्रीत

टिप्पणियाँ

ई स्थिति होती है। ''यचिभम्'' सूत्र से भसंज्ञा होती है। इसके बाद ''यस्येति च'' सूत्र से अकार का लोप होने और वर्णसम्मेलन होने पर वस्त्रक्रीती रूप सिद्ध होता है।

(11.7) ''इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृड हिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणांमानुक्''

सूत्रार्थ–इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, हिम्, अरव्य, यव, यवन मातुल आचार्य इन अदन्त प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीष प्रत्यय होता है तथा इन्द्रादि प्रातिपदिकों का आनुक् आगम होता है।

सूत्रावरण–ङीष्, ङीष्, ङीन्, इन तीनों प्रत्ययों में ङीष् प्रत्यय अन्यतम है। उसके विधान के लिए भगवान पाणिनी ने इन्द्रवरुण भवशर्व रुद्रमृडहिमारव्ययवयवनमातुलाचार्यानामानुक्'' सूत्र की रचना की।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। यह सूत्र ङीष प्रत्यय और आनुक् आगम् का विधान करता है। इस सूत्र में दो पद हैं।'' इन्द्रवरुणभवशर्वरु द्रमृड हिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणाम्'' पद षष्ठी बहुवचनान्त है। ''आनुक्'' यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। यहाँ पर ''अन्यतोङीष्'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय पद की अनुवृत्ति होती है। ''पुंयोगादाख्यायाम्'' सम्पूर्ण सूत्र की यहाँ अनुवृत्ति होती है। ''अजाद्यतष्टाप्'' सूत्र से अतः और इति पद की अनुवृत्ति आती है। इस सूत्र में ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' सूत्र से ''प्रातिपदिकात्'' की अनुवृत्ति होती है। ''अनुपसर्जनात्'' यह अधिकार सूत्र, ''प्रत्ययः'' अधिकार और ''परश्च'' अधिकार यहाँ आता है। यहाँ ''इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृड हिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणाम्'' यह समस्त पद है। और यहाँ पर इतरेतरयोगद्वन्दसमास है। और इसका विग्रह है इन्द्रश्च वरुणश्च भवश्य शर्वश्च रुद्रश्च मृडश्च हिमं च अख्यं च यवश्च यवनश्च मातुलश्च आचार्यश्च इति इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृड हिमारव्ययवयवनमातुल आचार्याः''। तेषाम् इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृड हिमारव्ययवयवमातुलाचार्यालाम् इति। (इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, हिम, अख्य, यव, यवन, मातुल और आचार्य)। इन्द्र वरुणभवशर्वरुद्रमृड हिम अख्ययवयवन मातुल आचार्य का।

सूत्रार्थ विचार–यहाँ अतः पद है और प्रातिपदिकात् इसका विशेषण है। अतः ''येन विधि स्तदन्तस्य'' सूत्र से तदन्तविधि है। और उससे अदन्तात् (अदन्त से) यह अर्थ प्राप्त होता है। ''इन्द्रवरुणभवशर्वकद्रमृड हिमारव्ययवयवनमातुलाचार्याणाम् पद भी प्रातिपदिकात् का विशेषण है। और इसके बाद इन्द्र वरुण भव शर्व रुद्र मूड हिम अरण्य यव यवन मातुल आचार्य इन अदन्त प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व द्योत्य होने पर ङीष् प्रत्यय होता है और इन्द्रादि प्रातिपदिकों से आनुक् आगम होता है। यहाँ यह बोध्य है कि यह इद्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, मातुल, आचार्य इन आठ प्रातिपदिकों से पुरुषसम्बन्ध दशा में होता है। अर्थात् उसकी स्त्री होने पर ङीष् प्रत्यय और आनुक आगम् होता है। हिम अरण्य इन दो प्रातिपदिकों से तो महत्त्व अर्थ में होता है। यव इस प्रातिपदिक से दुष्ट अर्थ होने पर होता है। यवन और इससे लिपि अर्थ में ङीष् प्रत्यय और आनुक आगम लिपि अर्थ में होता है।

उदाहरण–इन्द्राणी, वरुणानी, भवानी, शर्वाणी, रुद्राणी, मृदानी, हिमानी, अरण्यानी, यवानी, यवनानी, मातुलानी, आचार्यानी ये उदाहरण हैं–

इन्द्राणी–यहाँ पर इन्द्र शब्द है। यह शब्द देवराज का वाचक है। परन्तु परन्तु देवराज इन्द्र के साथ जिस शचीदेवी स्त्री का विवाह है उस शची देवी के लिए भी यह इन्द्रशब्द प्रयुक्त किया जाता है। अत: यह इन्द्रशब्द पुरुषसम्बन्ध से स्त्री में भी विद्यमान होता है। और यह अदन्त भी है। अत: स्त्रीत्व विवक्षा में पुरुष सम्बन्ध से स्त्री में विद्यमान अदन्त इन्द्र शब्द से प्रातिपदिक से ''पुंयोगाढारव्यायाम्'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय होता है, और इन्द्र प्रातिपदिक का आनुक् आगम होता है। उससे इन्द्र आनुक् ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोप:'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। आनुक के ककार की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होती है और आनुक् के उकार की ''उपदेशेऽजनुनासिकइत्'' सूत्र से इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोप:'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे इन्द्र आन ई स्थिति होती है। इसके बाद इन्द्र आन यहाँ ''अक: सवर्णे दीर्घ:'' सूत्र से दीर्घ होने पर इन्द्रान ई इस स्थिति में वर्णसम्मेलन में इन्द्राणी होने पर ''अट्कुप्वाङ्नुभ्वयवायेऽपि'' सूत्र से णत्व होने पर इन्द्राणी रूप सिद्ध करो। और उसका अर्थ है इन्द्र की स्त्री।

वरुणानी–यहाँ पर वरुण शब्द है। यह शब्द जलदेव का वाचक है। परन्तु जलदेव के साथ जिस स्त्री का विवाह सम्पन्न हुआ है उसके लिए यह शब्द प्रयुक्त किया जाता है। अत: यह वरुण शब्द पुरुष सम्बन्ध से स्त्री में भी विद्यमान होता है। और यह अदन्त भी है। अत: स्त्रीत्व विवक्षा में पुरुषसम्बन्ध से स्त्री में विद्यमान अदन्त वरुण प्रातिपदिक शब्द से ''पुंयोगादाख्यायाम्'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय होता है और ''वरुण प्रातिपदिक से आनुक् का आगम होता है। उससे वरुण आनुक ङीष् की स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र ङीष् के डकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से वकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोप:'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। आनुक् के ककार की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होती है। आनुक् और उकार की ''उपदेशेऽजनुनासिक इत्'' सूत्र से इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोप:'' सूत्र से उन दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे वरुण आन ई स्थिति होती है। इसके बाद वरुण आन् यहाँ पर ''अक:सवर्णे दीर्घ:'' सूत्र से होने पर दीघे प्राप्ति पर वरुणान् ई स्थिति में वर्णसम्मेलन होने पर वरुणानी रूप सिद्ध होता है। और इसका अर्थ है वरुण की स्त्री। और इसी प्रकार भवानी, शर्वाणी, रुद्राणी, मृडानी इत्यादि रूप भी सिद्ध होते हैं। यहाँ विस्तारभय से लिख नहीं रहे है। यहाँ भवानी का अर्थ है भव की स्त्री। शर्वाणी का अर्थ है शर्व की स्त्री।

आचार्यानी–यहाँ आचार्य शब्द है। यह शब्द अध्यापक वाचक है। परन्तु अध्यापक के साथ जिसका विवाह हुआ है उसके लिए भी यह आचार्य शब्द प्रयोग किया जाता है। अत: यह आचार्यशब्द पुरुष सम्बन्ध से स्त्री में विद्यमान होता है। और यह अदन्त भी है। अत: स्त्रीत्व विवक्षा में पुरुषसम्बन्ध से स्त्री में भी विद्यमान होता है। यह अदन्त भी है। अत: स्त्रीत्व विवक्षा में पुरुष सम्बन्ध से स्त्री में विद्यमान् अदन्त आचार्य प्रातिपदिक पर ''पुंयोगादारव्यायाम्'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय होता है। और आचार्य प्रातिपदिक का आनुक आगम होता है। इससे आचार्य आनुक् ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के डकार की इत्संज्ञा

टिप्पणियाँ

होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। उस इत्संज्ञक षकार का ''तस्य लोपः'' सूत्र से लोप होता है। उससे आचार्य आन् ई स्थिति होती है। इसके बाद आचार्य आन यहाँ ''अकः सवर्णे दीर्घः'' सूत्र से दीर्घ होने पर आचार्यान् ई स्थिति में वर्णसम्मेलन होने पर आचार्यानी सिद्ध होती है। यहाँ यद्यपि नकार के स्थान पर ''अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि'' सूत्र से णकार प्राप्त है किन्तु ''आचार्यादणत्वं च'' वातिक से नकार के णकार का निषेध होता है। उससे आचार्यानी रूप सिद्ध होता है। और इसका अर्थ है आचार्य की स्त्री।

हिमानी–यह हिम प्रातिपदिक है। और यह अदन्त भी है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में अदन्त हिम प्रातिपदिक से परे ''पुंयोगादाख्यायाम्'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय होता है। हिम प्रातिपदिक शब्द से आनुक् आगम होता है। और उससे हिम आनुक ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। आनुक् के ककार की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होती है आनुक् के उकार की ''उपदेशेऽजनुनासिक इत्'' सूत्र से इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोपः'' सूत्र से इन दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे हिम आन् ई स्थिति होती है। इसके बाद हिम आन् यहाँ पर ''अकः सवर्णे दीर्घः'' सूत्र से दीर्घ होने पर हिमान् ई स्थिति में वर्ण सम्मेलन होने पर हिमानी सिद्ध होता है। और इसका अर्थ है महद् हिमम् (विशाल वर्क वाला)।

अख्यानी–यहाँ अख्य शब्द प्रातिपदिक है। और यह अदन्त भी है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में अदन्त अरण्य प्रातिपदिक से परे ''पुंयोगादाख्यायाम्'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय होता है और अरण प्रातिपदिक का आनुक आगम् होता है। उससे वरुण आनुक् ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है उससे अरण्य आन ई स्थिति होती है। इसके बाद अख्य आन यहाँ पर ''अकः सवर्णे दीर्घः'' सूत्र से दीर्घ होने पर अख्यान ई स्थिति में वर्णसम्मेलन होने पर अख्यानी सिद्ध होता है। और इसका अर्थ है महद् अख्यम् (बड़ा जंगल)

यवानी–यहाँ यव शब्द प्रातिपदिक है। और यह अदन्त भी है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में अदन्त यव प्रातिपदिक से परे ''पुंयोगादाख्यायाम्'' सूत्र से ङीष् प्रत्यय होता है। और यव प्रातिपदिक का आजुक आगम होता है। उससे यव आतुक ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तथ्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। आनुक के ककार की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होती है और आनुक के उकार की ''उपदेशेऽजनुनासिक इत्'' सूत्र से इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे यव आन् ई स्थिति होती है। इसके बाद यवआन यहाँ पर व अकः सवर्णेदीर्घः'' सूत्र से दीर्घ होने यवान् ई स्थिति में वर्णसम्मेलन होने पर यवानी सिद्ध होता है। और अर्थ है दुष्टा यवा।

यवनानी–यहाँ यवन प्रातिपदिक है। और यह अदन्त भी है। अतः स्त्रीत्व विवक्षा में अदन्त यवन प्रातिपदिक से ''पुंयोगादाख्यायाम्'' सूत्र से ङीश् प्रत्यय होता है। और यवन प्रातिपदिक आनुक आगम होता है। उससे यवन आनुक ङीष् स्थिति होती है। इसके बाद ''लशक्वतद्धिते''

सूत्र से ङीष् के ङकार की इत्संज्ञा होती है। ''हलन्त्यम्'' सूत्र से षकार की इत्संज्ञा होती है। ''तस्यलोपः'' सूत्र से दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। आनुक् के ककार की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होती है और आनुक के उकार की ''उपदेशेऽजनुनासिक इत्'' सूत्र से इत्संज्ञा होती है। ''तस्य लोपः'' सूत्र से इन दोनों इत्संज्ञकों का लोप होता है। उससे यवन आन ई स्थिति होती है। इसके बाद यवन आन यहाँ ''अकः सवर्णेदीर्घः'' सूत्र से दीर्घ होने पर यवनान् ई स्थिति में वर्णसम्मेलन होने पर यवनानी रूप सिद्ध होता है। और इसका अर्थ है–यवनानां लिपिः (यवनों की लिपि)।

पाठगत प्रश्न

यहाँ कुछ पाठगत प्रश्न दिये जा रहे हैं।

1. गौरादयः इस पद में क्या समास है? और क्या विग्रह है?
2. अस्त्रीविषयात् पद का क्या अर्थ है?
3. संयोगोपद्यः पद में क्या समास है? और क्या विग्रह है?
4. गुणवचनात् पद का क्या अर्थ है?
5. करणपूर्वात् पद में कौन सा समास और कौन सा विग्रह है?
6. वस्त्रक्रीती का लौकिक विग्रह वाक्य लिखो?
7. अतिकेशी का लौकिक विग्रह वाक्य क्या है?
8. औपगवी का अर्थ क्या है?

पाठ सार

इस पाठ में ङीष् प्रत्यय का विवेचन है। यहाँ सर्वप्रथम ''षिद्गौरादिभ्यश्च'' सूत्र का व्याख्यान है। इसके बाद ''वोतोगुणवचनात्'' सूत्र की व्याख्या है। इसके बाद ''बह्वादिभ्यश्च'' सूत्र का विवेचन है। इसके पश्चात् ''इतो मनुष्यजातेः'' सूत्र का सोदाहरण व्याख्यान है। पुनः ''पुंयोगादाख्यायाम्'' सूत्र की व्याख्या प्रदर्शित की गई है। अतः के आगे ''स्वाङ्गाच्चोपसर्जनाद संयोगोपधात्'' सूत्र की व्याख्यान किया गया है। और अन्तिम में ''क्रीतात्पूर्वात्करणपूर्वात्'' सूत्र की व्याख्यान है। और अन्त में ''इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमाख्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक्'' सूत्र का सोदाहरण व्याख्यान है।

पाठान्त प्रश्न

यहाँ परीक्षोप योगी पूछने योग्य प्रश्न दिये जा रहे हैं–

1. ''षिद्गौरादिभ्यश्च'' सूत्र की व्याख्या कीजिये?
2. ''वोतोगुणवचनात्'' सूत्र की व्याख्या कीजिये?
3. इतो मनुष्यजातेः सूत्र की व्याख्या कीजिये?
4. ''जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्'' सूत्र की व्याख्या कीजिये?
5. ''स्वाङ्गच्चोपसर्जनादसंयोगपधात्'' सूत्र की व्याख्या कीजिये?
6. ''पुंयोगादाख्यायाम्'' सूत्र की व्याख्या कीजिये?
7. ''इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृड हिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक्'' सूत्र की व्याख्या कीजिये?
8. गौरी प्रयोग की सिद्धि लिखो?
9. नर्त्तकी प्रयोग की सिद्धि लिखो?
10. मृद्वी, मृदुः प्रयोग की सिद्धि लिखो?
11. दाक्षी प्रयोग की सिद्धि लिखो?
12. वस्त्रक्रीती प्रयोग की सिद्धि लिखो?
13. चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखा प्रयोग की सिद्धि लिखो?
14. तटी प्रयोग की सिद्धि लिखो?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1. गौरादय पद में बहुव्रीहि समास है और गौरः आदि येषां ते गौरादयः विग्रह है।
2. ''अस्त्रीविषयात्'' का नित्यस्त्रीलिङ्गनिन्न से अर्थ है।
3. संयोगोपधः पद में बहुव्रीहि समास है। संयोग उपधा में है जिसके वह संयोगोपधः।
4. गुणवचनात् पद का अर्थ गुणवाचक से है।
5. करणपूर्वात् पद में बहुव्रीहि समास है। करणं पूर्वं यस्य सः करणपूर्वः? तस्मात् करणपूर्वात् विग्रह है।
6. वस्त्रकीती का लौकिक विग्रह वाक्य होता है वस्त्रैः क्रीता (वस्त्रों से खरीदा गया) वस्त्रक्रीती।
7. केशान् अतिक्रान्ता यह अतिकेशी का लौकिक विग्रह वाक्य है।
8. उपगोः अपत्यं स्त्री का औपगवी अर्थ होता है।

ग्यारहवाँ पाठ समाप्त